सुक्ष्म जगत की संपूर्ण जानकारी?

बेहद के बच्चों को बेहद की परम शांति। मैं आज यह बताऊंगा कि जो बेहद के गोले में रहकर। बेहद के बच्चों का बेहद का आकारी बाप छोटूराम काम कर रहा है। तो बेहद का गोला जो 2 किलोमीटर डायामीटर का है। उसके अंदर 108 भी हैं। 1008 भी हैं। काम कर रहे हैं, सब। तो क्या यह 2 किलोमीटर का गोला जो है। उसके बीच में से कोई आत्माएं जो सुक्ष्म जगत में हैं। 5000 किलोमीटर पर ही हैं, धरती से 5000 किलोमीटर। पहले 500 किलोमीटर पर था। तो क्या सुक्ष्म जगत की आत्माएं उनको देख पाएंगी। तो, नहीं। क्योंकि सुक्ष्म जगत की आत्माएं तीन कला वाली हैं। तो तीन कला वाली क्या, 10 कला वाली आत्मा हो। तो भी उसको देख नहीं पाएगी। क्योंकि वो बेहद की कला का गोला है और उसके चारों ओर से अच्छी तरह से आवरणों से पैक किया है। उसके बाहर एंटी-ग्रेविटी लगाई है कि कोई भी आत्मा आएगी 2 किलोमीटर दूर से ही उसको डाइवर्जन मिल जाएगा। एंटी-ग्रेविटी लग जाएगी और वो आत्मा को पता लग जाएगा कि यहां कोई पावर है। जो हमें दूर भगा रहा है। तो वो दूर भाग जाएगी, आत्मा और नहीं तो पता लग जाएगा। इनको कि हम उसके अंदर आ गए। तो मुक्त हो जाएंगे। इसलिए चारों ओर एंटी-ग्रेविटी है। 2 किलोमीटर की एंटी-ग्रेविटी बाहर होती है। तो 2 किलोमीटर दूर से ही कोई भी आत्मा आएगी। तो भाग जाएगी। जैसे सागर के अंदर बवंडर होता है। तो लोग बवंडर में नहीं आना चाहते और जैसे गैलेक्सी में ब्लैक होल होते हैं।

तो बड़े-बड़े सूर्य के ब्लैक होल होते हैं। तो सुक्ष्म जगत वाली आत्माएं जो घूमती रहती हैं। उनको पता होता है। यहां ब्लैक होल है। ब्लैक होल के नजदीक जाएंगे। तो हम खत्म हो जाएंगे। इसी तरह बड़े-बड़े। 21 पीढ़ि वाला भी अपने गोले में रहकर 5000 किलोमीटर के ऊपर में छोटूराम के गोले के पास, वो थोड़ा दूर अपना गोला बनाकर। वो भी रहता है, 21 पीढ़ि वाला। क्योंकि वो 33 कोटि देवी-देवताओं को लेने आया है। जो 33 कोटि देवी-देवता हैं। वो उसकी रचना की रचना है। वो भी लेने आया हुआ है, 21 पीढ़ि से। तो सुक्ष्म जगत में बहुत हलचल है, बहुत। चारों ओर अनेक धर्म, मठ, पंथ, संप्रदाय वाले भी अपने-अपने गोले बनाकर बैठे हुए हैं, बहुत। सब हलचल है। सब देख रहे हैं। तो यह हाई क्वालिटी पावर के गोलों से, दूर से एंटी-ग्रेविटी भगा देती है। इसलिए सुक्ष्म जगत वाली आत्माएं समझ जाती हैं। कोई पावर है। तो दूर से भगा देती है। इसलिए यह समझने वाली बातें हैं। अति गुहिया बातें हैं। आत्मस्वरूप में स्थित रहकर देखो। तो ऐसे गोले आप को स्पष्ट रूप में दिखाई देंगे। 21 पीढ़ि वाले का भी है। नानूराम का 10 कला का भी है। नीरू भी अनेक गोले में रहकर काम कर रही है और दूसरे लोगों के भी गोले हैं। जो दूर-दूर से आए हैं। जो अनेक धर्म, मठ, पंथ, संप्रदाय की आत्माएं। जो यहां सुक्ष्म वतन में रहकर, धरती पर अपने अनेक धर्म, मठ, पंथ स्थापन कर रहे हैं। स्थूल वतन में वो भी हैं और धरती 500 खरब किलोमीटर, इससे भी ऊपर ओर भी मतलब हमारा ब्रह्मांड आज धरती से 1.6 प्रकाश वर्ष का हो गया है। बड़ा हो गया। ऐड होते...। ऐसे बहुत गोले नजर आएंगे। अगर आत्मस्वरूप में जिस दिन स्थित हो जाएंगे। दिव्य दृष्टि आ जाएगी। अंत में सब को दिव्य दृष्टि आ जाएगी। तो सब कुछ देख पाओगे। हमारा यूनिवर्स में भी भले स्थूल वतन 0 कला में आ गया। मगर 16 कला में भी दूर-दूर से आए हुए, बैठे हैं। पूरे मल्टीवर्स में भरे पड़े हैं।

तो एक दिन सब देखोगे। कैसे गोले में रहकर, बहुत दूर से आई हुई आत्माएं। गोले में रहकर, हमेशा। देवी-देवता भी पहले देखते थे। जब धरती पर आते थे। गोले में आते थे। ताकि स्थूल वायु तत्त्व उसके अंदर ना घुस जाए। तो परम लाइट के गोले के अंदर स्थूल तत्त्व नहीं घुस सकते। उसका आवरण पैक किया होता है। एंटी-ग्रेविटी होती है। तो पहले ब्रह्मांड, महाब्रह्मांड सब, बाहर अपने आवरण, बाहर एंटी-ग्रेविटी लगाते थे। जैसे एक कला का ब्रह्मांड है। तो एक कला का गोला होता था। एक कला का गोला माना एक प्रकाश वर्ष का गोला। एक प्रकाश वर्ष के गोले के अंदर चारों ओर परम लाइट का आवरण बनाकर, एंटी-ग्रेविटी डालते। ताकि दूसरे लोग उसमें घुस ना पाएं। गैलेक्सी भी पैक होती थी। गैलेक्सी भी जैसे 1 लाख प्रकाश वर्ष की है। तो महाशिव परम लाइट का चारों ओर पैक कर देता था। आवरण बना देता था। ताकि एंटीग्रिटी से दूसरी गैलेक्सियां ना टकराएं।

कोई भी अंदर घुस ना जाए। सब ऐसी रचना होती थी। चाहे ब्रह्मांड हो, चाहे महाब्रह्मांड हो, चाहे परम महाब्रह्मांड हो। सब अपने-अपने गोले में ऐसी एंटी-ग्रेविटी लगा देते थे। गोले के बाहर ताकि दूसरे लोग उसमें घुस ना पाएं। तो अति गुहिया बातें हैं। धीरे-धीरे सोचोगे। तो समझ में आ जाएगा। एंटी-ग्रेविटी, आज भी धरती पर एंटी-ग्रेविटी ढूंढ रहे हैं। एंटी पावर मिले। एंटी-ग्रेविटी मिले। तो एंटी-ग्रेविटी क्या है। ग्रेविटी क्या है। यह धीरे-धीरे सब साइंस वाले भी ढूंढ रहे हैं। समझ में आ जाएगा, सब कुछ। एक दिन एंटी-ग्रेविटी निकलेगी। एंटी-ग्रेविटी के साधन होंगे। एंटी-ग्रेविटी के प्लेन होंगे, एंटी-ग्रेविटी। आगे चलकर साइंस एकदम बदल जाएगी। एकदम परम तत्त्व के साधन हो जाएंगे और एंटी-ग्रेविटी से चलने वाले सारे परम तत्त्व के साधन होंगे। वायु यान परम तत्त्व के, एंटी-ग्रेविटी से चलने वाले। सब कुछ एंटी-ग्रेविटी से होगा। परम शांति...